ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए शिक्षा एक पहल (इग्नू के विशेष संदर्भ में)

भानु प्रताप सिंह*

समाज में तीसरे जेंडर को किन्नर, ट्रांसजेंडर, हिजड़ा, अर्वानीश, जोगप्पा या शिव शक्ति आदि नाम से पुकारा एवं जाना जाता है। ये लोग किसी के भी घर में शादी, सालगिरह, जन्मदिन आदि किसी भी शुभ अवसर पर पहुँच जाते हैं, बधाई गीत गाते हैं तथा पुरस्कार के रूप में धन, अनाज, वस्त्र अथवा गहने प्राप्त करते हैं। ऐसा नहीं है कि वे इस तरह के कार्य शौक से करते हैं। इसका कारण है— समाज द्वारा उन्हें उपेक्षित कर दिया जाना। उनके जीवन एवं भविष्य को केवल शिक्षा द्वारा ही बेहतर बनाया जा सकता है। अतः इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), नई दिल्ली द्वारा ट्रांसजेंडर समुदाय को इग्नू के किसी भी पाठ्यक्रम, जैसे— सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक, परास्नातक एवं अन्य उच्च कार्यक्रमों में निःशुल्क शिक्षा हेतु एक ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है। विश्वविद्यालय ट्रांसजेंडर समुदाय को ही नहीं, अपितु यौनकर्मियों, जेल कैदियों और बुनकरों को मुफ्त शिक्षा प्रदान कर रहा है। विश्वविद्यालय महिलाओं, अल्पसंख्यकों और जेल के कैदियों के अलावा सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक और/या भौगोलिक रूप से वंचितों को शिक्षा और प्रशिक्षण देने में सफल रहा है। इस लेख में ट्रांसजेंडरों की शिक्षा पर इग्नू के शैक्षिक प्रयासों का वर्णन किया गया है।

ट्रांसजेंडर शब्द को पहली बार 1965 में जॉन एफ ओलिवेन द्वारा सेक्शुअल हाइजीन एंड पैथोलाजी के संदर्भों में गढ़ा गया था। ट्रांसजेंडर शब्द को बाद में वर्जीनिया प्रिंस सहित कई लोगों द्वारा लोकप्रिय किया गया, जिन्होंने दिसंबर, 1980 के अंक में एक राष्ट्रीय पत्रिका, ट्रांसवेस्टेरिया में इस्तेमाल किया था। 1970 के दशक के मध्य तक ट्रांसजेंडर और ट्रांस-पीपुल, दोनों एक ही रूप में उपयोग में थे। ट्रांसजेंडर कानून और रोजगार नीति पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1992) ने ट्रांसजेंडर को “ट्रांससेक्शुअल, ट्रांसजेंडर, क्रॉस ड्रेसर” सहित एक विशाल शब्द के रूप में परिभाषित

किया। भारत में उपलब्ध साहित्य के माध्यम से ज्ञात होता है कि ट्रांसजेंडर समुदाय में हिजड़े, अर्वानीश, जोगप्पा, शिव शक्ति आदि शामिल हैं, जो सदियों से भारतीय समाज का हिस्सा रहे हैं। वहीं, वैदिक और पौराणिक साहित्य में “तृतीया प्रकृति” का अर्थ है— तीसरा जेंडर और “नपुंसक”।

भारतीय जनगणना में किसी भी वर्ष के लिए जनगणना के आँकड़ों को इकट्ठा करते हुए तीसरे जेंडर, यानि ट्रांसजेंडर को मान्यता नहीं दी गई। हालाँकि, 2011 की जनगणना में, ट्रांसजेंडर के डेटा को उनके रोजगार, पुनरावृत्ति और जाति से संबंधित

विवरण के साथ जेंडर के तहत 'अन्य' की श्रेणी में एकत्र किया गया था। 2011 की जनगणना से पता चला कि देश में ट्रांसजेंडर की कुल आबादी लगभग 4.88 लाख है। इसके पश्चात् अप्रैल 2014 में, सुप्रीम कोर्ट ने कानून में 'तीसरे जेंडर' के रूप में इन्हें मान्यता दी। भारतीय भाषा में प्रयुक्त हिजड़ा शब्द फ़ारसी शब्द 'हिज्र' से लिया गया है, जिसमें हिज्र का अर्थ किसी व्यक्ति से है, जो पवित्र और/या अप्रभावी या अक्षम है। आमतौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द किन्नर है, जबकि छक्का शब्द एक अपमानजनक संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। हालाँकि, आज अधिकांश ट्रांसजेंडर को ट्रैफ़िक सिग्नल्स पर या शादियों के दौरान पैसे माँगते हुए देखा जाता है, लेकिन मध्यकालीन भारत में मुगल शासन के दौरान उनका बहुत सम्मान किया जाता था। इसलिए, उन्हें उनके अनुकरण के कारण हरम के प्रभारी के रूप में रखा गया था। महाभारत में शिखंडी नामक किन्नर का उल्लेख मिलता है जिसके सम्मान में विख्यात धनुर्धारी भीष्म पितामह ने भी धनुष-बाण नीचे रख दिए थे तथा परिणामस्वरूप भीष्म पितामह को अर्जुन के बाणों की मृत्युशय्या पर लेटना पड़ा था।

ब्रिटिश शासन के दौरान उन्हें नागरिक अधिकारों से वंचित किया गया। ये समुदाय समाज से अलग-थलग रहते थे और उनके अपने रीति-रिवाज हैं और गाने के द्वारा भीख माँगने का कार्य करते थे। 18वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन में महिलाओं की तरह कपड़े पहनने और नृत्य करने वाले ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को लुटेरा एवं अत्याचारी कहा गया। वे स्त्री के कपड़े पहनने व आम स्थानों पर गाने-बजाने के कारण नियम 1871 के तहत गिरफ्तार किए जाते थे। आज़ादी के बाद 1949 में उक्त ब्रिटिश नियम

को समाप्त किया गया, लेकिन ट्रांसजेंडर समुदाय का शोषण आज भी समाप्त नहीं हुआ है।

ट्रांसजेंडर समुदाय के समान अधिकार हेतु सरकार द्वारा किए गए प्रयास

भारत में वर्ष 2014 को राष्ट्रीय विधिक सेवाएँ प्राधिकरण एवं भारतीय संघ के मध्य ट्रांसजेंडर के अधिकारों पर सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक निर्णय दिया, जिसके तहत केंद्र सरकार ने सभी राज्य सरकारों को निर्देश दिया कि ट्रांसजेंडर समुदाय को भारत के अन्य पुरुष एवं महिलाओं के समान अधिकार दिए जाएँ, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार आदि शामिल हैं। मानवाधिकार के तहत प्रत्येक नागरिक जिनमें ट्रांसजेंडर भी शामिल हैं, को कुछ मूलभूत अधिकार प्राप्त हैं। इन अधिकारों में जीने की आज़ादी प्रमुख है जिसे कोई भी व्यक्ति, तंत्र या सरकार नहीं छीन सकती। भारतीय संविधान में व्यक्ति को जीने की स्वतंत्रता के साथ-साथ समानता, आत्मसम्मान, गौरव तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान किया गया है।

सुप्रीम कोर्ट ने हिजड़ों, ट्रांसजेंडर, यमदूतों और इंटरसेक्स लोगों को 'तीसरे जेंडर' के रूप में मान्यता दी तथा ट्रांसजेंडर समुदाय की कल्याण अवधारणा को और गति मिली। ट्रांसजेंडर पर्सन्स (प्रोटेक्शन ऑफ़ राइट्स) बिल, 2016 में शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति के प्रति भेदभाव को रोकने के लिए बहुत स्पष्ट रूप से जोर दिया गया है। भारत सरकार द्वारा ट्रांसजेंडर लोगों के लिए कई कल्याणकारी नीतियों और योजनाओं को लागू किया गया है। इनमें जनगणना, दस्तावेज़, नागरिकता आईडी कार्ड जारी करना, ट्रांसजेंडर समुदाय के मानवाधिकारों के उल्लंघन को रोकने

के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तन, आवास, कानूनी उपाय, पुलिस सुधार, कानूनी और संवैधानिक सुरक्षा उपायों के साथ पासपोर्ट जारी करना शामिल है।

ट्रांसजेंडर समुदाय की विशिष्ट चिंताएँ

ट्रांसजेंडर सामाजिक और सांस्कृतिक भागीदारी से वंचित हैं, परिवार और समाज से दूर हैं। यह समाज ट्रांसजेंडर लोगों के जीवन की एक दैनिक लड़ाई है। वे अपने जीवन के लगभग हर क्षेत्र, जैसे—स्वास्थ्य, स्कूलों या कॉलेजों, रोजगार, सामाजिक योजनाओं और पात्रता में बहिष्कार एवं उपहास का सामना करते हैं। चरम सामाजिक बहिष्कार आत्मसम्मान और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को कम करता है। इस समुदाय को देश की मुख्यधारा के विकास कार्यक्रम में शामिल करने और सभी प्रकार के शोषण से बचाने की आवश्यकता है। भारत का संविधान देश के सभी नागरिकों को शैक्षिक अवसर प्रदान करता है। यह सुनिश्चित करता है कि राज्य धर्म, जाति, नस्ल, जेंडर या जन्म स्थान के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव नहीं करे।

ट्रांसजेंडर की सामाजिक स्थिति

जैसा कि डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था, “लोकतंत्र केवल यह प्रदान करता है कि सभी पुरुषों को अपनी असमान प्रतिभाओं के विकास के लिए समान अवसर होने चाहिए।” भारत एक लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष देश है। लोकतंत्र की सफलता उसके नागरिकों की शिक्षा पर निर्भर करती है। यह महत्वपूर्ण है कि सभी नागरिकों को अपने व्यक्तित्व को पूर्ण सीमा तक विकसित करने के लिए शैक्षिक अवसर प्रदान किए जाएँ। कल्याणकारी राज्य की मुख्यधारा में ट्रांसजेंडर

का शामिल करने की कवायद शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 (आर.टी.ई.) द्वारा परिभाषित “वंचित समूह” की श्रेणी में होती है। ट्रांसजेंडर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ई.डब्ल्यू.एस.) और वंचित विद्यार्थियों की श्रेणी में प्रवेश के लिए 25 फीसदी आरक्षण के पात्र हैं। उन्हें शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश की अनुमति दी जाएगी और इस आधार पर रोजगार का अवसर दिया जाएगा कि वे तीसरे जेंडर श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि हिजड़ों को तीसरे जेंडर के रूप में मान्यता देने वाले कानून की अनुपस्थिति को शिक्षा और रोजगार में अवसरों का लाभ उठाने के लिए उन्हें भेदभाव के आधार के रूप में जारी नहीं रखा जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उन्हें ओ.बी.सी. के रूप में शैक्षिक और रोजगार आरक्षण दिया जाएगा।

पुरातन काल में ट्रांसजेंडर की सामाजिक स्थिति इतनी दयनीय नहीं थी, अपितु वे अत्यधिक सम्मानित होते थे तथा किसी के घर पुत्र अथवा पुत्री के पैदा होने पर खुशियों के गीत गाते थे तथा नवजात शिशु के स्वस्थ एवं दीर्घायु होने का आशीर्वाद देते थे। कालांतर में इनकी स्थिति दिन-प्रतिदिन गिरती चली गई। इसके निम्नलिखित कारण रहे होंगे—

- किन्नर समुदाय की अशिक्षा।
- इनके लिए रोजगार के साधनों का उपलब्ध न होना।
- सरकारी रोजगार में किन्नर समुदाय का विकल्प न होना।
- सामाजिक समानता न होना।
- सामाजिक सुरक्षा के पर्याप्त उपायों का न होना।
- अवैध शारीरिक कृत्यों में लिप्त होना।

- बीमार एवं विकृतों के पर्याप्त चिकित्सा विकल्प उपलब्ध न होना।
- इनके विकास हेतु सरकारी प्रयासों की जानकारी का अभाव होना।
- गैर-सरकारी संगठन द्वारा इनकी शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार आदि में कम रुचि लेना।

भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, कुल 4.88 लाख लोग ट्रांसजेंडर हैं, जो कि विभिन्न प्रकार के सामाजिक उत्पीड़न के शिकार होते रहते हैं। भारतीय जनगणना के अनुसार कुल 4.88 लाख ट्रांसजेंडर में से केवल 56.07 प्रतिशत ही साक्षर हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त ट्रांसजेंडर की संख्या बहुत ही कम है। हालाँकि, भारत सरकार के प्रयास रहे हैं कि इनकी सामाजिक समरूपता सभी नागरिकों के समान रहे। परिणामस्वरूप शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार 6-14 वर्ष के ट्रांसजेंडर को वंचित समूह वर्ग के अंतर्गत स्कूलों या विद्यालयों में प्रवेश दिया जाए तथा आर्थिक रूप से कमजोर (ई.डब्ल्यू.एस.— इकोनोमिकली वीकर सेक्शन) के अंतर्गत 25 प्रतिशत आरक्षण दिया जाए। लेकिन प्रश्न उठता है कि ऐसे ट्रांसजेंडर जो सामाजिक विषमता के कारण पढ़-लिख न पाए हों या कम पढ़े-लिखे हों तथा वयस्क हों, उन्हें शिक्षा किस प्रकार प्रदान की जाए, जिससे वे अपने स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति सजग एवं जागरूक हो सकें।

ट्रांसजेंडर हेतु राज्यों की कल्याणकारी नीतियाँ

भारत के संदर्भ में ट्रांसजेंडर के लिए कोई औपचारिक शिक्षा लोकप्रिय नहीं है। वे परिवार और विद्यालय के माहौल से वंचित हैं, ट्रांसजेंडर शिक्षा प्राप्त नहीं करते

तथा अपने भविष्य के करियर के अवसरों को जोखिम में डालते हैं। विभिन्न रिपोर्टों और समुदाय एवं हितधारकों के साथ चर्चा का एक करीबी विश्लेषण बताता है कि ट्रांसजेंडर सबसे अशिक्षित या कम अशिक्षित हैं, ये स्कूली शिक्षा जारी रखने के लिए अनिच्छुक हो जाते हैं। औसत योग्यता माध्यमिक (मैट्रिक) या उच्च माध्यमिक स्तर है। नामांकन काफी कम है और प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर ड्रॉप-आउट दर अभी भी बहुत अधिक है। वे शायद इसलिए भी अशिक्षित हैं, क्योंकि वे न तो समाज द्वारा स्वीकार किए जाते हैं और इसलिए वो उचित स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं। यहाँ तक कि अगर वे एक शैक्षिक संस्थान में नामांकित हैं, तो उन्हें उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है एवं प्रत्येक दिन उन्हें धमकाया जाता है तथा उन्हें स्कूल छोड़ने के लिए कहा जाता है या वे अपने आप बाहर निकल जाते हैं। हमारे देश के कुछ राज्य ट्रांसजेंडर्स की बेहतरी के लिए कार्य कर रहे हैं। तमिलनाडु एकमात्र राज्य है, जिसने ट्रांसजेंडर (अरावनी, जैसा कि उन्हें स्थानीय स्तर पर कल्याणकारी नीति कहा जाता है) के लिए अरावती नीति को पेश करके ट्रांसजेंडर को लोक कल्याणकारी नीतियों में सफलतापूर्वक शामिल करने का बीड़ा उठाया है। इस नीति के अनुसार, ट्रांसजेंडर सरकारी अस्पताल में निःशुल्क पुरुष से महिला सेक्स रिसाइनिंग सर्जरी (एस.आर.एस.) का उपयोग कर सकते हैं, इसके अलावा वे मुफ्त आवास कार्यक्रम, विभिन्न नागरिकता दस्तावेज़, उच्च अध्ययन के लिए पूर्ण छात्रवृत्ति के साथ सरकारी कॉलेजों में प्रवेश एवं आजीविका के वैकल्पिक स्रोत स्व-सहायता समूहों

के गठन तथा आय सृजन कार्यक्रम शुरू करने के माध्यम से सरकारी योजनाओं का लाभ ले सकते हैं। यह ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रतिनिधियों के साथ 2008 में एक ट्रांसजेंडर कल्याण बोर्ड बनाने वाला पहला राज्य भी था। मार्च 2009 में, तमिलनाडु सरकार ने ट्रांसजेंडर “मानसु” नामक एक टेलीफोन हेल्पलाइन की स्थापना की। यह पहल 2011 में मदुरै ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए भारत की पहली हेल्पलाइन के गठन के लिए जिम्मेदार थी।

छत्तीसगढ़ सरकार भी राज्य में लगभग 3000 ट्रांसजेंडर समुदाय को सशक्त बनाने के प्रयास कर रही है। पश्चिम बंगाल सरकार बहुत पीछे नहीं है। अक्टूबर 2015 में सरकार ने कोलकाता पुलिस से सिविक पुलिस वालंटियर फोर्स में, ट्रांसजेंडर की भर्ती करने का अनुरोध किया है। देश में सभी सामाजिक और सेवा क्षेत्रों में अपनी क्षमता और ताकत स्थापित करने की बात की है। सत्यश्री शर्मिला, भारत की पहली ट्रांसजेंडर वकील बनीं, जोईता मंडल उत्तर बंगाल में लोक अदालत की पहली ट्रांसजेंडर जज बनीं, प्रथिका याशिनी भारत की पहली ट्रांसजेंडर पुलिस ऑफिसर हैं, मनाबी बंदनाध्याय पीएच.डी. डिग्री प्राप्त करने के बाद पश्चिम बंगाल में एक कॉलेज की पहली ट्रांसजेंडर प्रिंसिपल हैं। अंग्रेजी साहित्य में मुमताज़ एक राष्ट्रीय राजनीतिक पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ने वाली भारत की पहली ट्रांसजेंडर हैं, वहीं शबनम मौसी मध्य प्रदेश के शहडोल ज़िले से विधायक बनीं। ये नाम एकमात्र

नहीं हैं, बल्कि ऐसे कई और उदाहरण हैं। ये सब अन्य ट्रांसजेंडर्स के लिए उदाहरण निर्धारित कर सकते हैं। हालाँकि, दुनिया का सामना करना आसान नहीं है। लगभग हर दूसरे ट्रांसजेंडर को उस समाज में अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ता है, जिसमें वे रहते हैं। ट्रांसजेंडर द्वारा शिक्षा में भागीदारी उनके जीवन को बेहतर और अधिक सार्थक बनाने में सबसे शक्तिशाली परिवर्तनकारी एजेंट हो सकती है।

इग्नू द्वारा ट्रांसजेंडर समुदाय को शिक्षा

शिक्षा किसी राष्ट्र के विकास का प्रमुख साधन है तथा भारतीय संविधान के अनुसार भारत के सभी नागरिकों को शिक्षा के समान अधिकार प्राप्त हैं। इसके तहत किसी भी धर्म, जाति, वर्ग, जेंडर आदि के आधार पर किसी भी नागरिक को शिक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता। इग्नू समावेशी शिक्षा के लिए प्रयास कर रहा है और 1985 में अपनी स्थापना के बाद से महिलाओं, अल्पसंख्यकों और जेल के कैदियों के अलावा सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक एवं भौगोलिक रूप से वंचितों को शिक्षा और प्रशिक्षण देने में सफल रहा है। सामाजिक समरसता हेतु भारत सरकार द्वारा विभिन्न प्रयास किए गए हैं। इन प्रयासों में इग्नू भी अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। इग्नू के 56 क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत आने वाले अध्ययन केंद्रों पर नामांकित ट्रांसजेंडर समुदाय को विगत पाँच वर्ष में इग्नू द्वारा उच्च शिक्षा प्रदान की जा रही है, जिसका विवरण तालिका 1 में दिया गया है।

तालिका 1— इग्नू के अध्ययन केंद्रों पर विगत पाँच वर्ष में नामांकित ट्रांसजेंडर समुदाय की संख्या

सत्र	कुल प्रवेश
जनवरी 2016	45
जुलाई 2016	82
जनवरी 2017	33
जुलाई 2017	100
जनवरी 2018	78
जुलाई 2018	122
जनवरी 2019	22
जुलाई 2019	66
जनवरी 2020	19
जुलाई 2020	18
कुल योग	600

इग्नू के 56 विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत नामांकित ट्रांसजेंडर समुदाय

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), नई दिल्ली ने 29 जून, 2017 को एक ऐतिहासिक निर्णय लिया जिसके अंतर्गत इग्नू के 56 विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत आने वाले सभी अध्ययन केंद्रों (लगभग 3200) पर ट्रांसजेंडर समुदाय को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाएगी। ट्रांसजेंडर समुदाय को इग्नू के किसी भी पाठ्यक्रम, जैसे— सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक, परास्नातक एवं अन्य उच्च कार्यक्रमों में निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है।

क्षेत्रीय केंद्र नोएडा द्वारा ट्रांसजेंडर समुदाय की निःशुल्क शिक्षा हेतु जागरूकता अभियान

इग्नू क्षेत्रीय केंद्र नोएडा द्वारा बसेरा सामाजिक संस्थान, नोएडा के सहयोग से ट्रांसजेंडर्स को इग्नू की उच्च शिक्षा द्वारा मुख्यधारा में लाने हेतु प्रयास किया जा रहा है। दिनांक 19 अप्रैल, 2018 को इग्नू क्षेत्रीय केंद्र नोएडा पर महिला परिवेश में ट्रांसजेंडर्स ने बसेरा सामाजिक संस्थान, नोएडा नामक गैर-सरकारी संस्थान के माध्यम से उच्च शिक्षा हेतु आवेदन किया। आवेदन में बसेरा सामाजिक संस्थान, नोएडा ने तीन मुख्य बातें रखीं—

1. इग्नू द्वारा ट्रांसजेंडर्स को अध्ययन सामग्री निःशुल्क अथवा रियायती दर पर उपलब्ध कराना।
2. इग्नू द्वारा ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को अनुकूल वातावरण प्रदान करना, जिसमें वे भयमुक्त एवं सुरक्षित महसूस कर सकें।
3. इग्नू में नामांकित ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के साथ अन्य शिक्षार्थियों के समान व्यवहार किया जाए।

क्षेत्रीय केंद्र, नोएडा ने बसेरा सामाजिक संस्थान, नोएडा को बताया कि इग्नू भारत में प्रतिनिधित्व करने वाले सभी समूहों, महिलाओं, अल्पसंख्यकों और जेल के कैदियों के अलावा सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक और/या भौगोलिक रूप से वंचितों को शिक्षा और प्रशिक्षण दे रहा है

तथा इग्नू ने आश्वासन दिया कि विश्वविद्यालय में नामांकित ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के साथ अन्य शिक्षार्थियों के समान व्यवहार किया जाएगा। क्षेत्रीय केंद्र, नोएडा ने बसेरा सामाजिक संस्थान, नोएडा, को यह भी बताया कि इग्नू, नई दिल्ली ट्रांसजेंडर समुदाय को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करता है। इग्नू के उक्त निर्णय में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि केंद्र तथा राज्य सरकार द्वारा जारी किसी भी शैक्षिक प्रमाण पत्र के आधार पर ट्रांसजेंडर समुदाय इग्नू के किसी भी कार्यक्रम की अर्हता पूर्ण करते हुए प्रवेश ले सकते हैं। इसी क्रम में क्षेत्रीय केंद्र, नोएडा द्वारा ट्रांसजेंडर समुदाय को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने हेतु जागरूकता अभियान के तहत 26 जून, 2018 (मंगलवार) को बसेरा सामाजिक संस्थान, नोएडा के सहयोग से निःशुल्क उच्च शिक्षा में प्रवेश हेतु कैंप लगाया गया। इस अभियान के द्वारा प्रारंभिक स्नातक उपाधि कार्यक्रम (बी.पी.पी.), एच.आई.वी. और परिवार शिक्षा में प्रमाण पत्र, एच.आई.वी. और पारिवारिक शिक्षा में डिप्लोमा (डी.ए.एफ.ई.), भोजन और पोषण में प्रमाण पत्र (सी.एफ.एन.), पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा में डिप्लोमा (डी.एन.एच.ई.) जैसे विभिन्न कार्यक्रमों में 59 ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों ने प्रवेश लिया।

ट्रांसजेंडर की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधान

स्कूली शिक्षा में ट्रांसजेंडर बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि ट्रांसजेंडर बच्चों पर एक

विश्वसनीय राष्ट्रीय डेटाबेस स्थापित हो। ट्रांसजेंडर बच्चों के संवैधानिक अधिकारों के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने सुरक्षित और सहायक स्कूल वातावरण बनाने का प्रस्ताव दिया है। स्कूलों, स्कूल परिसरों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों और उनके माता-पिता के साथ परामर्श करने के लिए एक योजना विकसित की, ताकि पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को ट्रांसजेंडर बच्चों, उनकी चिंताओं एवं दृष्टिकोणों से संबंधित मुद्दों को संबोधित करने के लिए फिर से तैयार किया जाएगा, जो उनकी सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने में मदद करेंगे। शिक्षकों को ट्रांसजेंडर बच्चों से संबंधित मुद्दों और उनकी चिंताओं एवं सीखने की ज़रूरतों के बारे में संवेदनशील बनाया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में, उन सिविल सोसाइटी समूहों को शामिल करने का प्रस्ताव दिया गया है, जिन्होंने इन बच्चों के लिए शिक्षा कार्यक्रमों के नियोजन और कार्यान्वयन में ट्रांसजेंडर बच्चों के साथ काम करने का पर्याप्त ज्ञान और अनुभव प्राप्त किया है। 34 वर्षों में इस तरह का पहला कदम उठाया गया है, जिसमें लड़कियों के लिए समान शिक्षा के लिए लैंगिक समावेश निधि और सुप्रीम कोर्ट ने 6 सितंबर, 2018 के ऐतिहासिक फैसले के अनुरूप ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों के लिए सार्वजनिक निवेश में पर्याप्त वृद्धि लाना है। शिक्षा में ट्रांसजेंडर को शामिल करने हेतु माननीय सर्वोच्च न्यायालय के 2014 के निर्देशों को बनाए रखना पहली नीति है।

भारत ने विशेष रूप से शिक्षा के बुनियादी ढाँचे और हाल के वर्षों में विद्यार्थियों के नामांकन के

संबंध में शिक्षा में सुधार देखा है। कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उल्लेखनीय सुधार के बावजूद, भारतीय शिक्षा प्रणाली असमानता और बहिष्कार की चुनौतियों से जूझ रही है। अधिकांश ग्रामीण आबादी और कमजोर और हाशिये पर रहने वाले समूहों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच अभी भी एक जटिल समस्या है। यह उच्च शिक्षा के क्षेत्र में और भी अधिक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 देश की शिक्षा प्रणाली में बढ़ती असमानता को दूर करने का प्रयास करती है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि सभी समूहों और सामाजिक-आर्थिक श्रेणियों में महिला और ट्रांसजेंडर व्यक्ति सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। यह नीति महिलाओं और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए बेहतर शैक्षिक स्थान बनाने के लिए जेंडर-समावेशी निधि बनाने का प्रस्ताव करती है। यह निधि राज्यों के लिए सुलभ होगी, ताकि वे ऐसी व्यवस्था कर सकें जो इन विद्यार्थियों को शामिल करने में मदद करें। इसके अलावा यह फंड राज्यों को प्रभावी समुदाय-आधारित हस्तक्षेपों का समर्थन करने और बढ़ावा देने में सक्षम करेगा, जो महिला और ट्रांसजेंडर बच्चों की पहुँच के लिए स्थानीय संदर्भ-विशिष्ट बाधाओं को संबोधित करते हैं। शिक्षकों को बच्चों में सीखने की शुरुआती अक्षमताओं की पहचान करने और सीखने में अक्षम बच्चों को शिक्षा में सफल होने और उनके मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र, परख, को सामाजिक-आर्थिक श्रेणियों में महिला, ट्रांसजेंडर व्यक्तियों और दिव्यांग बच्चों के लिए

मूल्यांकन की न्यायसंगत प्रणाली बनाने के लिए तैयार किया जाएगा।

निष्कर्ष

भारत में ट्रांसजेंडर्स के व्यावसायिक विकास और रोजगार के लिए इग्नू की ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग उच्च शिक्षा सहित मुख्यधारा की शिक्षा में ट्रांसजेंडर की भागीदारी बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ट्रांसजेंडर के लिए शुल्क में छूट के प्रावधानों को लागू करने के लिए देश का पहला विश्वविद्यालय बन गया। ट्रांसजेंडर समुदाय के विद्यार्थियों के लिए उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने 13 फ़रवरी, 2020 सत्र जुलाई 2020 से अपने सभी कार्यक्रमों में निःशुल्क प्रवेश देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। इग्नू की तरह ही उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों को 100 प्रतिशत शुल्क माफ़ी प्रदान करता है। शिक्षा के इन प्रयासों से ट्रांसजेंडर्स को सामाजिक गतिशीलता का अधिक अवसर मिलेगा। इसी कड़ी में ट्रांसजेंडर समुदाय की शिक्षा के लिए इग्नू जैसी संस्थाओं की भी आवश्यकता है। अब तक कॉमनवेल्थ ऑफ़ लर्निंग (सी.ओ.एफ़.) द्वारा किए गए अध्ययनों के अनुसार, इग्नू समावेशी शिक्षा के लिए प्रयास कर रहा है और 1985 में अपनी स्थापना के बाद से भारत में प्रतिनिधित्व करने वाले सभी समूहों तक पहुँचने की भागीदारी में आगे पाया गया। इग्नू द्वारा ग्रामीण महिलाओं को विशेष रूप से सभी शैक्षिक प्रोग्राम में प्रोत्साहित करने के साथ-साथ यौनकर्मियों, जेल कैदियों और बुनकरों को मुफ्त शिक्षा प्रदान कर रहा है। विश्वविद्यालय महिलाओं, अल्पसंख्यकों

और जेल के कैदियों के अलावा सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक और/या भौगोलिक रूप से वंचितों को शिक्षा और प्रशिक्षण देने में सफल रहा है। शायद ही किसी ने कल्पना की होगी कि वर्ष 1985 में बना तथा मात्र दो शैक्षिक कार्यक्रमों, दूरस्थ शिक्षा एवं प्रबंध शिक्षा में डिप्लोमा में 4585 नामांकन के साथ राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय आज विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय बन गया है। इस परिप्रेक्ष्य में निम्न दो पंक्तियाँ पूर्णरूप से चरितार्थ हो रही हैं—

जहाँ न पहुँचे जुगनु, वहाँ पर पहुँचे इग्नू
जिस प्रकार अंधकारमय रात में जुगनु अपने प्रकाश से उजाला प्रसारित करता है, उसी प्रकार अशिक्षा के अँधेरे में इग्नू ही एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जो अल्प शुल्क में विभिन्न मल्टी मीडिया साधनों, उत्तम कोटि की अध्ययन सामग्री एवं विद्वान शैक्षिक परामर्शदाताओं के सहयोग से उच्च शिक्षा का प्रकाश भारत में ही नहीं, अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी फैला रहा है।

संदर्भ

- अमर उजाला. 27 जून, 2018. इग्नू में ट्रांसजेंडर समुदाय को मिला निःशुल्क प्रवेश, स्पॉट एडमिशन कैंप का आयोजन. 30 दिसंबर, 2020 को <https://www.amarujala.com/education/free-admission-to-transgender-community-in-ignou-spot-admission-camp-organized> से प्राप्त किया गया है.
- आज तक. 15 अप्रैल, 2014. सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला, किन्नर हैं तीसरी लिंग श्रेणी, मिले विशेष दर्जा. 30 दिसंबर, 2020 को <https://www.aajtak.in/india/story/supreme-court-recognizes-transgenders-as-third-gender-208072-2014-04-15> से प्राप्त किया गया है.
- टॉप न्यूज़. 14 मार्च, 2009. तमिलनाडु लॉन्चिस हेल्पलाइन 'मनासु' फ़ॉर ट्रांसजेंडर. 30 दिसंबर, 2020 को <https://topnews.in/tamil-nadu-launches-helpline-manasu-transgenders-2139394> से प्राप्त किया गया है.
- नवभारत टाइम्स. 30 दिसंबर, 2018. सुप्रीम कोर्ट ने 2018 में दिए कई ऐतिहासिक फैसले जिनका आपसे है सीधा सरोकार. 30 दिसंबर, 2020 को <https://navbharattimes.indiatimes.com/india/2018-the-year-of-many-landmark-judgements-of-supreme-court-of-india/articleshow/67307649.cms> से प्राप्त किया गया है.
- शिक्षा मंत्रालय. 2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
- सामाजिक न्याय और अधिकारिकता. 2012. शिक्षा और रोज़गार के अवसर और ट्रांसजेंडर के लिए चुनौतियाँ. अश्रेण, विजी. 2015. द लाइफ़ ऑफ़ ट्रांसजेंडर इन इंडिया. 30 दिसंबर, 2020 को <https://www.mapsofindia.com/my-india/government/the-life-of-transgenders> से प्राप्त किया गया है.